

कृषि संसार

WEEKLY KRISHI SANSAR

All Subject to Patiala Jurisdiction.

RNI Regd. No. T/PB/2024/0508/3389/1059 • Chief Editor : Jagpreet Singh • Issue Dt. 02-11-2024 • Vol.1 No.1 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • Mob. 98151-04575 • Page 8

2047 तक सरप्लस पानी का लक्ष्य वर्षा जल संचय के लिए मेगा प्रोग्राम बना रहा केन्द्र

भूजल स्तर में सुधार और पानी की सरप्लस उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए केन्द्र सरकार तीन स्तरों वाला मेगा वाटर मैनेजमेंट प्रोग्राम बनाने में जुटी है। इसके लिए वाटर प्रबंधन फ्रेमवर्क बनाया जा रहा है।

अतिक्रमण की वजह से भारी संकुचन हुआ है। गाद, मलवा आदि के उपयोग के लिए केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय को जिम्मेदारी दी जाएगी। अर्थात् सड़क निर्माण के दौरान पत्थर, मिट्टी की जरूरतों



इसका लक्ष्य 2047 तक खेती, उद्योग और पेयजल की सौ फीसदी जरूरतों को पूरा करना है। इसमें वाटर कैचमेंट एरिया से पूरा करना है। इसमें वाटर कैचमेट एरिया के क्षेत्रफल को बढ़ाना, नदियों से वाटर लिफ्ट कर नहरों के जरिए कैचमेट क्षेत्र तक पहुंचाना और जरूरत से 10 फीसदी अधिक पानी को कृत्रिम तालाबों में संरक्षित करने की योजना है। फ्रेमवर्क में जल शक्ति मंत्रालय, ग्रामीण विकास एवं पंचायत और सड़क परिवहन मंत्रालय शामिल होंगे।

इस कार्यक्रम को तीन चरण में पूरा किया जाएगा। पहले चरण में समुद्री तट वाले 11 राज्यों में गुजरने वाली नदियों के पानी के दस फीसदी हिस्से को लिफ्ट कर 450 से अधिक वाटर कैचमेट एरिया में पहुंचाया जाएगा। दूसरे चरण में लैंड लॉक स्टेट (जहाँ समुद्र नहीं है) के 1600 से ज्यादा कैचमेट के क्षेत्रफल को बढ़ा कर वहाँ जल संग्रह करना है। तीसरे चरण में कृत्रिम तालाबों में जल को संग्रह करना है।

तीन स्तरीय जल प्रबंधन होगा

* पहला स्तर : समुद्र तट वाले राज्यों में बारिश के दौरान पानी नदियों के जरिए समुद्र में बह जाता है। योजना के मुताबिक बारिश के दौरान इन नदियों से दस फीसदी पानी लिफ्ट कर उन्हें नहर के जरिए कैचमेट एरिया में ले जाकर छोड़ा जाएगा। कैचमेट एरिया फुल होने पर पानी को रिवर्स कैनल मेथड से वापस समुद्र में बहने दिया जाएगा, ताकि अत्याधिक पानी होने से खेती और लोगों को परेशानी नहीं हो।

* दूसरा स्तर : जल मंत्रालय के एक अधिकारी का कहना है कि वाटर कैचमेट एरिया वर्षों से 42-60 फीसदी तक संकुचित हो गए हैं। इनमें गाद भरने और

सोलन में हरे मटर का सैंपल फेल, पाई गई लैंड की मात्रा

खाद्य सुरक्षा विभाग ने सोलन में हरे मटर, शिमला मिर्च, नाशपाती व आड़ के लिए थे सैंपल

ज़िला सोलन में दवाओं व खाद्य पदार्थों के बाद अब सब्जियों के सैंपल भी फेल होने शुरू हो गए हैं।

खाद्य सुरक्षा विभाग (शहरी) द्वारा शहर में लिए गए सब्जियों के सैंपल में हरे मटर का सैंपल फेल हो गया है।

चिंता की बात यह है कि मटर में लैंड (सीसा) की मात्रा पाई गई है। इसके कारण मटर को असुरक्षित करार दिया है। हालांकि विभाग द्वारा सोलन शहर में हरे मटर शिमला मिर्च, आड़ व



नाशपाती के सैंपल लिए गए थे। विभाग यह जानना चाह रहा था कि कीटनाशक दवाओं व रासायनिक खादों का इनकी गुणवत्ता पर कितना असर पड़ रहा है।

विभाग ने इन सैंपलों को जांच के लिए आई.टी.सी., पंचकूला भेजा। इन सैंपलों की जब रिपोर्ट आई तो विभाग के अधिकारी यह देखकर हैरान रह गए कि हरे मटर को छोड़ कर सभी सब्जियों व फलों के सैंपल पास हो गए, लेकिन मटर का सैंपल कीटनाशक दवाओं व रासायनिक खादों के कारण नहीं बल्कि लैंड की मात्रा के कारण फेल हो गया है। अब यह सवाल पैदा हो गया है कि मटर में लैंड की मात्रा कैसे विकसित हुई है।

बताया जा रहा है कि हो सकता है कि मटर की सिंचाई के लिए इस्तेमाल हो रहे पानी में लैंड की मात्रा

हो, जो मटर के अंदर विकसित हुई है। लोगों ने खराब पड़े इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों को इधर-उधर फेंका हुआ है। इन उपकरणों का लैंड पानी में घुल कर खेतों में पहुंच रहा है। उससे फसलें भी खराब हो रही हैं।

खाद्य सुरक्षा विभाग (एम.सी.एरिया) सहायक आयुक्त डॉ. अतुल कायस्थ ने बताया कि हैरानी की बात यह है कि मटर में लैंड की मात्रा पाई गई है। इस मामले में नियमों के तहत कार्यवाई की जा रही है।

अब समय पर सब्जियों व फलों के सैंपल लिए जाएंगे

यह मामला सामने आने के बाद विभाग ने योजना बनाई है कि अब समय पर सब्जियों व फलों के सैंपल लिए जाएंगे। यह भी पता नहीं चला है कि यह मटर दुकान में कहाँ से आया होगा, क्योंकि सब्ज़ी मंडी में मटर की आपूर्ति पंजाब से हो रही है, इसके अलावा यह ज़िला सिरमौर व ज़िला मंडी से भी बड़ी मात्रा में आ रहा है। इससे पूर्व मटर ज़िला किन्नौर व लाहौल-स्पीति से भी आ रहा था।

खेती दुनिया की ओर से समूह पाठकों और किसान भाईयों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

गेहूं की खेती विश्व के प्रायः हर भाग में होती है। संसार की कुल 23 प्रतिशत भूमि पर गेहूं की खेती की जाती है। गेहूं विश्वव्यापी महत्व की फसल है। मुख्य रूप से एशिया में धान की खेती की जाती है, तो भी विश्व के सभी प्रायद्वीपों में गेहूं उगाया जाता है। विश्व में सबसे अधिक क्षेत्रफल में गेहूं उगाने वाले प्रमुख तीन राष्ट्र – भारत, रशियन फैडरेशन और संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। गेहूं उत्पादन में चीन के बाद भारत तथा अमेरिका का क्रम आता है।

उपयुक्त जलवायु क्षेत्र :

गेहूं मुख्यतः एक ठंडी एवं शुष्क जलवायु की फसल है। अतः फसल बोने के समय 20 से 22 डिग्री सैलिस्यस बढ़वार के समय इष्टतम ताप 25 डिग्री सैलिस्यस तथा पकने के समय 14 से 15 डिग्री सैलिस्यस तापक्रम उत्तम रहता है। तापमान से अधिक होने पर फसल जल्दी पक जाती है और उपज घट जाती है। पाले से फसल को बहुत नुकसान होता है। बाली लगने के समय पाला पड़ने पर बीज अंकुरण शक्ति खो देते हैं और उसका विकास रुक जाता है। छोटे दिनों पत्तियां और कल्लों की बाढ़ अधिक होती है, जबकि दिन बढ़ने के साथ-साथ बाली निकलना आरम्भ होता है। इसकी खेती के लिए 60-100 सैटीमीटर वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते हैं। पौधों की वृद्धि के लिए वातावरण में 50-60 प्रतिशत आद्रता उपयुक्त पाई गई है। ठंडा शीतकाल तथा गर्म ग्रीष्मकाल गेहूं की बेहतर फसल के लिए उपयुक्त माना जाता है। गर्म एवं नम जलवायु गेहूं के लिए उचित नहीं होती, क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में फसल में रोग अधिक लगते हैं।

भूमि का चयन : गेहूं सभी प्रकार की कृषि योग्य भूमियों में पैदा हो सकता है, परन्तु दोमट से भारी दोमट, जलोढ़ मूदाओं में गेहूं की खेती सफलतापूर्वक की जाती है। जल निकास की सुविधा होने पर मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में भी इसकी अच्छी फसल ली जा सकती है। कपास की काली मूदा में गेहूं की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है।

गेहूं की प्रमुख उन्नत किस्मों की विशेषताएं

- 1. रतन :** इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह किस्म सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है। यह किस्म 112 दिन में पकती है। दाना गोल होता है। सूखा व गेरूआ रोधक किस्म है, जो औसतन 19 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज देती है।

2. अरपा : इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह



में उन्नत किस्मों के बीज का महत्वपूर्ण स्थान है। गेहूं की किस्मों का चुनाव जलवायु, बोने का समय और क्षेत्र के आधार पर करना चाहिए।

गेहूं की तैयारी करते समय हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बुवाई के समय खेत खरपतवार मुक्त हो, भूमि में पर्याप्त नमी हो तथा मिट्टी इतनी भुरभुरी हो जाए, ताकि बुवाई आसानी से उचित गहराई तथा समान दूरी पर की जा सके। खरीफ की फसल काटने के बाद खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल (एमबी प्लॉ) से करनी चाहिए, जिससे खरीफ फसल के अवशेष और खरपतवार मिट्टी में दब कर सड़ जाएं। इसके बाद आवश्यकता अनुसार 2-3 जुताईयां देशी हल - बखर या कल्याँवेटर से करनी चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा देकर खेत समतल कर लेना चाहिए।

4. एन.पी.-404 : यह काला और भूरा गेरूआ निरोधक कठिया किस्म असिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। यह 135 दिन में पक कर तैयार होती है। पैदावार 10 से 11 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होता है। इसका दाना शारबती चमकदार होता है। यह चपाती बनाने के लिए विशेष उपयुक्त है।

5. मेघदूत : यह काला और भूरा गेरूआ निरोधक कठिया जाति असिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। इसके पकने का समय 135 दिन है। इसकी पैदावार 11 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है। इसका दाना एन.पी.-404 से कड़ा होता है।

6. हाइब्रिड-65 : यह पिसिया किस्म है, जो भूरा गेरूआ निरोधक है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावार असिंचित अवस्था में 13 से 19 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है। इसका दाना, शारबती, चमकदार, 1000 बीज का भार 42 ग्राम होता है।

7. मुक्ता : यह पिसिया किस्म है जो भूरा गेरूआ निरोधक है। असिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावार 13-15 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है। इसका दाना शारबती लम्बा और चमकदार होता है।

8. सुजाता : यह पिसिया (शारबती) किस्म काला और भूरा गेरूआ सहनशील है। असिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावार 13-17 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है। इसका दाना शारबती, मोटा और चमकदार होता है।

9. सोनालिका : यह गेरूआ निरोधक, अंबर रंग की, बड़े दाने वाली किस्म है। यह 110 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। दर से बोने के लिए उपयुक्त है। धान काटने के बाद जमीन तैयार कर बुवाई की जा सकती है। इसकी पैदावार 30 से 35 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

10. कल्याण सोना (एच.डी.एम.-1593) : इसका दाना चमकदार, शारबती रंग का होता है। यह किस्म 35 दिन में पक जाती है। पैदावार प्रति हैक्टेयर 30 से 35 क्विंटल तक होती है। गेरूआ रोग



से प्रभावित यह किस्म अभी भी काफी प्रचलित है।

11. नर्मदा-112 : यह पिसिया (शारबती) किस्म है, जो काला और भूरा गेरूआ निरोधक है। असिंचित एवं सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों के

पैदावार 38 से 40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

16. जे.डब्लू.-7 : यह देर से तैयार (130-135 दिन) होने वाली किस्म है। बीज शरबती, मुलायम से हल्के कड़े (1000 बीज का भार 46 ग्राम) होते हैं। रोटी हेतु उत्तम, सी-306 से अधिक प्रोटीन होता है। इसकी औसत उपज 23-25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

लिए उपयुक्त है। इसके पकने का समय 120-135 दिन है। इसकी पैदावार 14-16 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है। इसका दाना शरबती चमकदार और बड़ा और शरबती होता है। यह चपाती बनाने के लिए विशेष उपयुक्त है।

12. डब्ल्यू.एच.-147 : यह बोनी पिसी किस्म काला और भूरा गेरूआ निरोधक है। सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। बाले गसी हुई मोटी होती हैं। इसका पकने का समय 125 दिन होता है। इसका दाना मोटा शरबती होता है। इसकी पैदावार 40 से 45 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

13. एच.डी.-4530 : यह बोनी कठिया किस्म काला और भूरा गेरूआ निरोधक है। सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। बाले गसी हुई मोटी होती हैं। इसका पकने का समय 125 दिन होता है। इसका दाना मोटा शरबती होता है। इसकी पैदावार 40 से 45 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

14. शेरा (एच.डी.-1925) : देर से बोने के लिए यह जाति उपयुक्त है। यह गेरूआ निरोधक है। यह कम समय 110 दिन में पक जाती है। दर से बोने के लिए उपयुक्त है। धान काटने के बाद जमीन तैयार कर बुवाई की जा सकती है। इसकी पैदावार 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

15. जयराज : इसकी ऊंचाई 100 सैटीमीटर है। यह जाति 115 दिन में पकती है। इसके दाने शरबती मोटे (1000 दानों का भार 49 ग्राम) व चमकदार होते हैं। यह गेरूआ प्रतिबंधक सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। यह किस्म दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक बोई जा सकती है। इसकी

गेहूं की नवीन उन्नत किस्म

1. जे.डब्लू.-1106 : यह मध्यम अवधि (115 दिन) वाली किस्म है, जिसके पौधे सीधे मध्यम ऊंचाई के होते हैं। बीज का आकार सिंचित अवस्था में बड़ा व आकर्षक होता है। शरबती तथा अधिक प्रोटीन युक्त किस्म है, जिसकी औसत उपज 40-50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

2. अमृता (एच.आई.-1500) : यह शरबती श्रेणी की नवीनतम सूखा निरोधक किस्म है। इसका पौधा अद्वैती सीधा तथा ऊंचाई 120-135 सैटीमीटर होती है। दाने मध्यम गोल, सुनहरा (अम्बर) रंग एवं चमकदार होते हैं। इसके 1000 दानों का वज़न 45-48 ग्राम और बाल आने का समय 85 दिन है। फसल पकने की अवधि 125-130 दिन तथा आदर्श परिस्थितियों में 30-35 क्विंटल प्रति हैक्टेयर उपज देती है।

3. स्वर्ण (एच.आई.-1479) : समय से बोने हेतु मध्य प्रदेश की उर्वरा भूमियों के लिए शीघ्र पकने वाली गेरूआ निरोधक किस्म है। गेहूं का दाना लम्बा, बोल्ड, आकर्षक, शरबती जैसा चमकदार व स्वादिष्ट होता है। इसके 1000 दानों का वज़न 45-48 ग्राम होता है। फसल अवधि 45-48 ग्राम होता है। फसल पकने की अवधि 115 दिन है। इस किस्म से 2-3 सिंचाईयों से अच्छी उपज ली जा सकती है। गेहूं की लोक-1 किस्म के विकल्प के रूप में इसकी खेती की जा सकती है।

4. हर्षित (एच.आई.-1531) : यह सूखा पाला अवरोधी मध्यम बोनी (75-90 सैटीमीटर ऊंचाई) किस्म के विकल्प के रूप में इसकी खेती की जा सकती है।



भूमि का पी.एच. मान 5 से 7.5 के बीच में होना फसल के लिए उपयुक्त रहता है, क्योंकि अधिक क्षारीय या अम्लीय भूमि गेहूं के लिए उपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी : अच्छे अंकुरण के लिए एक बेहतर भूरभुरी मिट्टी की आवश्यकता होती है। समय पर जुताई खेत में नमी संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। वास्तव में

3. नर्मदा-4 : यह पिसी शरबती किस्म, काला और भूरा

मटर की खेती पूरे भारत में व्यवसायिक रूप से की जाती है। मटर को सर्दी के मौसम में उगाया जाता है। मटर का सब्ज़ियाँ में एक खास स्थान है। इसकी खेती हरी फली और दाल प्राप्त करने के लिए पीले मटर का उपयोग बेसन के रूप में, दाल के रूप में और छोले के रूप में किया जाता है। मटर में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फास्फोरस, रेशा, पोटाशियम और विटामिन की जैसे मुख्य पोषक तत्व पाए जाते हैं। ये सभी तत्व हमारे शरीर के लिए लाभदायक होती हैं। आइये जानते हैं कि इस प्रमुख फसल में कौन से रोग लगते हैं और उनसे किस तरह से निजात पाया जा सकता है।

1. जड़ गलन तथा पौधों



का मुरझाना (उखेड़ा) : यह मटर की फसल का एक प्रमुख विनाशकारी रोग है, जो भारत के सभी मटर उगाने वाले राज्यों में सामान्य रूप से पाया जाता है। एक ही खेत में मटर की फसल लगातार लेने से यह रोग की समस्या ज्यादा आती है। इस रोग को मुरझाना या उखेड़ा के नाम से जाना जाता है।

लक्षण : इस रोग का संक्रमण फसल की प्रारम्भिक अवस्था में उस समय होता है, जब पौधे 5-6 सप्ताह के होते हैं। रोग का प्रमुख लक्षण प्रौढ़ पौधों का मुरझाना है। पत्तियाँ पीली पड़कर मुरझाने और सूखने लगती हैं तथा पौधा सूख जाता है। मुख्य जड़ों और तनों के अधार वाले ऊतक काले रंग के दिखाई देते हैं तथा जड़ों पर काले रंग की धारियाँ बन जाती हैं। यह रोग प्यूज़ेरियम ऑक्सीस्पोरम पाइसी से होता है।

प्रबंधन :

* खेतों में छूटी गहरी जड़ों को निकाल कर नष्ट करें।

- * गर्मियों के दिनों में गहरी जुराई करनी चाहिए।
- * अगोती बुवाई नहीं करें।
- * रोगरोधी किस्मों का ही चुनाव करें।

- * बाविस्टिन प्रति 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से बीज का उपचार करें।
- 2. चूर्णिल आसिता रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) :** यह रोग लगभग

पवन कुमार कासनिया एवं मनजीत सिंह, पौध रोग विभाग, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

फलियों को भी संक्रमित करते हैं, जिससे फलियों पर काला धब्बा बनता है एवं दाने छोटे रह जाते हैं। बीमारी तीव्र होने पर पत्तियाँ सूख कर नीचे गिर जाती हैं एवं फलियों कम लगती हैं। पत्तियों के जिस स्थान पर फफूद का जाल फैला रहता है। वहाँ की कोशिकाएं ऊतक क्षय की वजह से मर जाती हैं।

प्रबंधन :

* फसल की कटाई के बाद खेत में पड़े रोगी पौधों के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिए।

* फसल की देर से बुवाई नहीं करनी चाहिए और फलियों वाली फसल लेने के लिए मटर की अगोती किस्में बोनी चाहिए।

* मटर की रोगरोधी किस्मों का ही चयन करें।

* घुलनशील सल्फर 0.3 प्रतिशत या बेनलेट 0.1 प्रतिशत या



ज्यादा पाया जाता है, तब खेत में फलियों की संख्या में कमी हो जाती है। यह रोग ईरीसाइफी पोलीगोनी नामक फफूद की वजह से होता है।

लक्षण : इस रोग में पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बनते हैं। इन धब्बों पर पाउडर जैसे फफूद दिखाई देते हैं। बाद में यह पौधे के तने व

बाविस्टिन 0.1 प्रतिशत या केराथेन 0.2 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें और एक सप्ताह के बाद फिर से छिड़काव करें।

3. मृदुरोगिल आसिता रोग

: यह रोग नम मौसम और कोहरा वाले समय में लगता है। भारत में यह रोग उन सभी राज्यों में होता है,

जहां मटर की खेती की जाती है। मौसम की अनुकूलता ही इस रोग की व्यापकता का मुख्य कारण है।

लक्षण : इस रोग के लक्षण तरुण पौधों पर उस समय दिखते हैं, जब उनमें तीसरी और चौथी पत्तियाँ



निकल आती हैं। सबसे पहले पत्तियों पर पीलापन दिखने लगता है और बाद में भूरे धब्बे बनने लगते हैं। पहले यह धब्बे निचली पत्तियों पर बनते हैं और बाद में ऊपर वाली पत्तियों पर फैल जाते हैं। रोग का प्रभाव फलियों पर भी होता है। फलियाँ कच्ची हरी एवं चपटी होती हैं। फलियों के दोनों सतह पर हल्के हरे दागों के रूप में धब्बे बनते हैं। इन दागों के नीचे फलियों के भीतर उभरे हुए सफेद विक्षित बन जाते हैं। यह रोग पेरोनोस्पोरा पाइसी नामक फफूद की वजह से होता है।

प्रबंधन : * खेत में पड़े रोगी पौधों के अवशेष नष्ट कर दें।

* दो-तीन वर्ष का फसल-चक्र अपनाएं।

* खेत के आस-पास के खरपतवार नष्ट करें।

* रोगरोधी किस्मों का ही चुनाव करें।

4. रस्ट (रतुआ) : यह रोग नम जलवायु वाले क्षेत्रों में मटर की फसल को बहुत अधिक हानि पहुंचाता है। रोग की व्यापकता में मटर के



पौधों के तने विक्रित एवं ऊतकक्षीय हो जाते हैं हैं और पौधों की मृत्यु हो जाती है।

लक्षण : इस रोग के लक्षण पौधों पर फरवरी-मार्च में दिखाई देते हैं। पौधों के हरे भागों पर हल्का पीलापन आता है, जो धीरे-धीरे भूरे हो जाता है। फसल के पकने पर गहरे भूरे अथवा काले रंग के टेल्यूटोस्पोट पत्तियों एवं तनों पर बनते हैं। पत्तियों पर जाल बनते हैं।

प्रबंधन : * हमेशा प्रमाणित बीज का ही उपयोग करें।

* रोगरोधी किस्मों का ही चुनाव करें।

5. मोजेक रोग :

लक्षण : विषाणु के कारण पत्तियों के साथ शिरा हरिमाहीनता हो जाती है। पत्तियों के किनारों अथवा सिरों पर पीलापन आ जाता है। संक्रमित पौधों के पर्णक किनारे पर से ऊपर की ओर मुड़ना आरम्भ करते हैं। कभी-कभी पत्तियों पर हल्का विकीर्ण चिकित्कबापन भी दिखाई देता है। संक्रमित पौधा सामान्य पौधों की अपेक्षा छोटा रह जाता है। फलियाँ संख्या में कम छोटी पीले हरे रंग की हो जाती हैं।

प्रबंधन : * खेत से रोग संक्रमित पौधों एवं खरपतवारों को उखाड़ कर जला देना चाहिए।

* रोग मुक्त बीजों का ही चयन करें।

* रोग रोधी किस्मों का ही चुनाव करें।

* इस रोग की रोकथाम के लिए सफेद मक्खियों का नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है। इसके लिए डाइमेथोएट 30 ई.सी. 400 मिलीलीटर प्रति एकड़ का छिड़काव करें।

आपकी फसल की संभाल..... कोपल के साथ क्लोडीकोप, स्पिक और मेटकोप, खरपतवारों पर फुलस्टॉप

आपकी फसल की संभाल..... **कोपल** के साथ
क्लोडीकोप, स्पिक और मेटकोप, खरपतवारों पर फुलस्टॉप

Clodicop
POST EMERGENCE HERBICIDE
CLODINAFOPO-PROPARGYL 15% WP
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED CO.

METCOP
HERBICIDE
METSULFURON METHYL 20% WP
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED CO.

Spick
SELECTIVE HERBICIDE
SULFOSULFURON 75% WG
1 Acre
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED CO.

कृषि संसार

KRISHI SANSAR

हैड ऑफिस :
9-ए, अजीत नगर,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 98151—04575

ब्रांच ऑफिस :
के.डी. कॉम्प्लैक्स, गजशाला रोड,
नजदीक शेरे पंजाब मार्केट,
पटियाला—147001
(पंजाब)
मो. 90410—14575

वर्ष : 01 अंक : 01
तिथि : 02-11-2024

सम्पादक
जगप्रीत सिंह

सम्पादकीय बोर्ड
डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझोले

विकल्पों का अभाव काश! हम पराली को लाभकारी बना पाते

ऋतुपर्ण दवे

नासा वर्ल्डव्यू एनिमेशन, सेटेलाइट तस्वीरों, चंडीगढ़ पीजीआई और पंजाब यूनिवर्सिटी के एक शोध से यह साफ हो गया है कि भारतीय पंजाब के मुकाबले पाकिस्तानी पंजाब में पराली ज्यादा जलाई जाती है। वहीं, कुछ आंकड़े भी इस बात को पुख्ता करते हैं कि हरियाणा में 24 प्रतिशत और पंजाब में 40 प्रतिशत कम पराली इस 1 सितंबर से अक्तूबर के तीसरे हफ्ते तक जली।

है। तमाम बयानबाजियां यही दिखाती हैं। कैसी कोशिशें हैं कि हर साल न धुआं थमता है और न ही पराली का जलना। सरहद पार के



को पुख्ता करते हैं कि हरियाणा में 24 प्रतिशत और पंजाब में 40 प्रतिशत कम पराली इस 1 सितंबर से अक्तूबर के तीसरे हफ्ते तक जली। यह भी सही है कि धान कटाई का यह पीक सीजन नहीं था। दिवाली के थोड़े पहले और अब दिवाली बाद अलग नजारा दिखने लगा है।

इधर, सुप्रीम कोर्ट ने भी हाल ही में एक बार फिर, दिल्ली में बढ़ते वायु प्रदूषण पर केंद्र सरकार को छिलाई पर कड़ी फटकार लगाई और पंजाब और हरियाणा सरकारों को भी चेताया। इस बाबत सख्त कानून न लागू करने पर चिंता भी जताई। सफाई, बचाव, तर्क-कुर्तक पर अभी और पहले भी सुप्रीम कोर्ट की पीड़ा इसी से समझ आती है कि पर्यावरण संरक्षण अधिनियम को दंतहीन तक कह दिया। कोर्ट में प्रस्तुत जवाब पर सवाल खड़े होने पर गंभीरता जताते हुए बात अवमानना की चेतावनी तक पहुंचना कम नहीं है।

सच है कि पराली का जलना, प्रदूषण का बढ़ा आरोप-प्रत्यारोप और राजनीतिक विषय बन चुका

है। छोटे-बड़े सभी किसानों को अगली फसल की बुराई की ताबड़तोड़ तैयारी और मौसम का डर सताता है। किसान मानते हैं कि दूसरी फसल के लिए बहुत कम वक्त मिलता है। ऐसे में छोटे किसानों के सामने सरकारी मदद की खानापूर्ति और तमाम बाधा, असमंजस के चलते भी नुकसान जानकर भी पराली जलाने का अपराध करना मजबूरी बन जाता है।



ही करते हैं, जो छोटे-छोटे भू-भाग के बाबजूद विशाल रकबे में फैले हैं। न तो उनके पास इतनी जमीन है कि ऋण लेकर मशीनें खरीद और न ही सामर्थ्य। ऐसे में पराली निदान के लिए महंगी मशीनों में निवेश या कर्ज लेकर चुकाने की हैसियत भी आड़े आती है। खेती मौसम पर निर्भर

अब रोजाना दिल्ली और सेटे राज्यों में हवा की फिजा बदलेगी। खुलकर सांस लेना और मुश्किल होगा। हवा की बिगड़ती गुणवत्ता इस साल के नए रिकॉर्ड छुएगी। प्रदूषण अभी इतनी बदतर स्थिति में जा पहुंचा है कि सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़े ने मॉर्निंग वॉक पर जाना बंद कर दिया।

ऐसे में आमजन की सुध पर सरकारी तंत्र की कौशिशों पर ही सबका ध्यान जाएगा। अदालत भी मानती है कि केंद्र और राज्यों को याद दिलाने का यही वक्त है कि भारतीय संविधान के भाग-3 में मौजूद अनुच्छेद 21 के तहत लोगों को प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहने का मौलिक अधिकार है।

दिल्ली का वायु प्रदूषण दशकों पुराना मुद्दा है। वर्ष 1985 में ही इसके खिलाफ आवाज उठी थी, जब कीर्ति नगर जैसे घने रिहायशी इलाके में एक फर्टिलाइजर प्लांट की जहरीली हवा लोगों को बीमार करने लगी। तब एक वकील एम.सी. मेहता ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई। ट्रायल के दौरान ही प्लांट से ओलियम गैस रिसी और तीस हजारी कोर्ट के एक वकील की जान चली गई। कहाँ की हालत बिगड़ी थी। इसके बाद कई कंपनियां पर प्रतिबंध लगा। आबादी वाले क्षेत्र में क्लोरीन, सुपर क्लोरीन, ओलियम, फॉस्फेट जैसे जहरीले उत्पाद बनाने पर रोक लगी। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने भी प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहने को मौलिक अधिकार बनाया।

अब तक कागजों पर योजना बनाने, बैठकें करने और अंत में आरोप-प्रत्यारोप के खेल से ज्यादा क्या हासिल हुआ? न पराली के दूसरे उपयोग किसानों को समझा पाए और न क्लाउड सीडिंग से कृत्रिम बारिश कराकर प्रदूषण से फैरी राहत पर वो कर सके जो कुछ देशों ने कर दिखाया। सिवाय

आपसी दांव-पेच के, न पराली संग्रहण कर उपयोगी उत्पादों में भूमिका बनी, न ही जलाने से रोकने के प्रभावी कानून बनाकर अर्थिक लाभ की तरफ रुख कर पाए। मुद्दा गंभीर जरूर है, लेकिन निदान असंभव भी नहीं। काश! पराली से राख के बजाय रुपये कमाने की पहल होती।

भारत को 2028 तक पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का इरादा है, और इसमें जिन तत्वों और सेक्टर के योगदान की जरूरत पड़ेगी, उनमें एक है सहकारिता क्षेत्र। यह भारतीय कृषि की रीढ़ है और इससे ही कृषि और कृषक समृद्ध हो रहे हैं। दुनियाभर में जितने भी सहकारिता संगठन हैं, उनका 27 फीसदी अकेले भारत में है, और उससे देश की कुल जनसंख्या का 20 फीसदी हिस्सा जुड़ा हुआ है। देश में इस समय कुल 8.55 लाख को-ऑपरेटिव सोसायटीज हैं और इनमें 29 करोड़ लोग सीधे तौर से शामिल हैं, जिन्हें इससे रोजगार और वित्तीय सुरक्षा मिलती है।

विश्व के सबसे बड़े 300 को-ऑपरेटिव में भारत के इफको, कृषकों और अमूल इसका जीता-जागता उदाहरण है। इन्होंने करोड़ों भारतीयों को न केवल रोजगार दिया है बल्कि उन्हें सम्पाननजनक जिंदगी भी दी है। भारत का सहकारिता क्षेत्र कृषि ऋण देने में भी ऊंचा स्थान रखता है। भारत के कुल कृषि ऋण का 20 फीसदी इस क्षेत्र के जरिये बनता है। कृषि उत्पादन में भी इसका बड़ा योगदान है और हमारी कुल कृषि उपज का 21 फीसदी इसी क्षेत्र से आता है। भारत की चीनी मिलों के बारे में तो सभी जानते हैं। को-ऑपरेटिव सेक्टर की चीनी मिलों का कुल चीनी का 31 फीसदी उत्पादित करती है। गेहूं और चावल की खरीद में भी इस क्षेत्र का बड़ा योगदान है।

निरूसंदेह, इस क्षेत्र में वह क्षमता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को पांच खरब डॉलर के लैंडमार्क तक ले जा सकता है। इसे ही ध्यान में रखकर वर्ष 2021 में एक नया स्वतंत्र मंत्रालय बनाया गया, जिसे सहकारिता मंत्रालय का नाम दिया गया। इसकी कमान गृह मंत्री के हाथों में सौंपी गई। मंत्रालय का जोर कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण



सहकारिता आंदोलन

कृषि व किसान को समृद्ध करने का मंत्र

मधुरेन्द्र सिंहा

के अलावा उसे सशक्त बनाने पर है और उसमें उसे सफलता मिल रही है। इस मंत्रालय ने एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य सामने रखा है और वह देश की दो लाख पंचायतों में अगले पांच वर्षों में बहुदेशीय प्राथमिक क्रेडिट सोसायटीज़ यानी पैक्स का गठन करने के महत्वपूर्ण कार्य में जुटा हुआ है। इनमें से अब तक 12,000 से भी ज्यादा का पंजीकरण हो चुका है और शेष इसी रास्ते पर है।

दरअसल, सहकार से समृद्धि का जो विजन रखा गया है उसके लिए देश में सहकारिता आंदोलन को बढ़ावा दिया जा रहा है ताकि देश में यह स्थायित्व को बढ़ावा दे, जो आगे चलकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। इन नये पैक्स, डेयरी तथा मत्स्य पालन सहकारिता सोसायटीज़ को हर पंचायत में गठित किया जा रहा है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी।

5,500 मत्स्य पालन को-ऑपरेटिव भी मजबूत किये जायेंगे। इसके



लिए प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना सहित कई स्कीमों की मदद ली जायेगी। इसके साथ ही 25,000 नये पैक्स, डेयरी और मत्स्य को-ऑपरेटिव गठित करके राज्य सरकार भी इस दिशा में योगदान करेंगी।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2025 को संयुक्त राष्ट्र ने सहकारिता का वर्ष घोषित किया है। उस

साल का थीम होगा - 'को-ऑपरेटिव बनाते हैं एक बेहतर दुनिया।' इसके लिए राजधानी दिल्ली में नवंबर महीने में इसका बाकायदा उद्घाटन होगा।

भारत को-ऑपरेटिव सेक्टर में सबसे बड़ी विकेन्द्रित अनाज भंडारण योजना पर काम कर रहा है। इसमें 27 राज्य और केन्द्रशासित राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के सभी बड़े को-ऑपरेटिव फेडरेशन आयेंगे। इसने व्हाइट रिवोल्यूशन 2.0 को भी सभी के सामने रखा है। यह नई श्वेत क्रांति महिलाओं का सशक्तीकरण करेगी, रोजगार बढ़ायेगी और सहकारिता का दायरा फैलायेगी। ऐसी योजना है कि पांचवें वर्ष तक डेयरी को-ऑपरेटिव ही अकेले 1,000 लाख किलोग्राम दूध हर दिन इकट्ठा करें। इससे गोपालकों की आय बढ़ेगी और रोजगार भी बढ़ेगा। सहकारिता मंत्रालय की कोशिश है कि भारत दुग्ध प्रसंस्करण उपकरणों का सबसे बड़ा निर्माता भी बने। सहकारिता मंत्रालय अन्नदाताओं को ऊर्जादाता बनने

मिलावट का धंधा, कभी नहीं मंदा

जैसे-जैसे त्योहारों की वेला निकट आती है, खाद्य विभाग का अमला मिलावट रोकने के लिए एक्शन मोड़ में आ जाता है। साल भर यह वातानुकूलित कर्मरों में बैठकर मौन व्रत धारण कर लेता है, जिससे

लिए बंद कर देते हैं।

पिछले दिनों नकली मावे की शिकायत पर शहर की नामी मिठाई की दुकान 'ठगू स्वीट्स' पर छापे की कार्रवाई की गई, मिठाई के नमूने लिए गए। सभी अखबारों में प्रमुखता

के मालिक ठगूमूल का चेहरा पहले से ज्यादा चमकदार हो गया। फिलहाल 'लेन देन' ही संसार का नियम है और ठगूमूल इसी नियम में पारंगत है।

उधर, कभी परचून की छोटी सी दुकान से शुरूआत करने वाले झामक सेठ शहर का रसूखदार नाम है। उनके खिलाफ धनिया पाउडर में भूसा, लाल मिर्च में ईट का बुरादा, हल्दी में रासायनिक रंग और जीरे में बारीक कंकर मिलाने की शिकायत की गई। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से उनकी दुकान से खाद्य सामग्री के लिए गए सारे नमूने पास हो गए। इस पाक-साफ रिपोर्ट के बाद वे अब बहुत बड़े शापिंग माल का संचालन कर रहे हैं। जब सैया भए कोतवाल तो डर काहे का।

दूध देने वाले जानवरों की संख्या में लगातार कमी हो रही है, लेकिन जारी तरीके से दूध की श्वेत सरिता बह रही है। बड़े शहरों में तो दूध के नाम पर पता नहीं क्या बेचा जा रहा है? पहले तो दूध में केवल पानी की ही मिलावट की जाती थी, लेकिन अब तो यूरिया



और जहरीले रसायन से नई पीढ़ी को गर्त में धकेलने की पुरजोर कोशिश जारी है। बल्कि मिलावटखोरों ने भगवान को इसकी जद में ले लिया है। मिलावटी दूध से अभिषेक, सस्ते नकली धी से पूजा अनुष्ठान और नकली अगरबत्ती से भगवान को प्रसन्न करने के जरूरि किए जा रहे हैं। मिलावट का धंधा इतना

जोरों पर है लेकिन चारों तरफ खामोशी है। खुलेआम बिना किसी रोक टोक के विषेले फल, सब्जियां और पेय पदार्थ बिक रहे हैं। मगर संवेदनहीनता और लालच का ग्राफ बढ़ता जा रहा है। वैसे आजकल मिलीभगत से मिलावट में ही बढ़त है, बाकी चारों तरफ गिरावट हीं जारी है।

- धर्मद्र जोशी



मिलावटखोर बेरबौफ होकर मिलावटी और नकली वस्तुओं का धंधा करते हैं। जब खाद्य विभाग छापेमारी करता है, तो उनकी दुकानदारी बंद नहीं होती बल्कि चांदी के जूते छापा मारने वालों का मुंह साल भर के

कचरे का संकट

राजनीतिक असंवेदनशीलता से बढ़ता स्वास्थ्य जोखिम

दिल्ली में कूड़े के पहाड़ गंभीर समस्या बन चुके हैं, और इस पर प्रधानमंत्री कार्यालय ने भी चिंता जताई है। प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव ने वायु प्रदूषण से निपटने के लिए गठित विशेष कार्यबल की बैठक में कचरे के निपटान में हो रही देरी पर नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ मिलकर कचरा निपटान के लिए मौजूदा कानूनों के सख्त अनुपालन और कचरे से बिजली बनाने की योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इसके साथ ही, सड़कों और निर्माण गतिविधियों में धूल नियन्त्रण के उपायों को भी प्राथमिकता देने की बात की गई।

वास्तव में स्वच्छ भारत मिशन का मुख्य उद्देश्य दिल्ली में वर्षों से जमा कूड़े के ढेरों को समाप्त करना था, जो अब पहाड़ की शक्ति ले चुके हैं। यह मिशन 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू हुआ, और एक महत्वपूर्ण पड़ाव 1 अक्टूबर 2021 को आया जब एसबीएम-2.0 की शुरुआत हुई। इस योजना के तहत कूड़े के पहाड़ों को खत्म करने का लक्ष्य रखा गया, और यह सुनिश्चित किया गया कि भविष्य में ऐसी समस्याएं न उभरें।

केंद्र सरकार ने कूड़े के ढेरों को समाप्त करने के लिए 3000 करोड़ रुपये से अधिक की योजना शुरू की थी, जिसमें राज्यों से सक्रिय भागीदारी की अपेक्षा की गई थी। हालांकि, राजनीतिक दावपेच के चलते इन कूड़े के पहाड़ों का निवारण अब तक नहीं हो सका है। आंकड़ों के अनुसार, पिछले तीन वर्षों में केवल 15 फीसदी कूड़े के पहाड़ कम हो पाए हैं, जिसकी आवास और शहरी विकास मंत्रालय द्वारा भी पुष्टि की गई है। यह स्थिति समस्या के समाधान में अनिच्छा और समन्वय की कमी को दर्शाती है।

देश में 2,421 कूड़ाघर हैं, जहां 1,000 टन से अधिक ठोस कचरा



जमा है। आवास और शहरी विकास मंत्रालय के अनुसार, कूड़े के पहाड़ों में लगभग 15,000 एकड़ जमीन पर 16 करोड़ टन से ज्यादा कचरा फंसा है, जिसका निस्तारण एक बड़ी चुनौती है। प्रयासों के बावजूद, केवल 470 स्थानों को पूरी तरह साफ किया जा सका है, जबकि 730 साइट अभी तक निस्तारण की प्रक्रिया से बाहर हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि नगर निकायों के पास कचरे के निस्तारण की कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं है।

कुछ राज्यों की बात करें तो इस मामले में गुजरात शीर्ष पर है, जहां 202 लाख टन ठोस कचरे में से केवल 10.73 लाख टन कचरे का ही बहाँ निस्तारण होना बाकी है। जबकि देश की राजधानी दिल्ली में 203 लाख टन ठोस कचरे में से 126.02 लाख टन कचरे का निस्तारण अभी बाकी है। महाराष्ट्र में 388 लाख टन में से 242 लाख टन, पंजाब में 73.62 लाख टन में से 37.73 लाख टन, मध्य प्रदेश में 63.23 लाख टन में से 47.68 लाख टन, जम्मू-कश्मीर में 22.10 लाख टन में से 21.08 लाख टन, उत्तराखण्ड में 14.12 लाख टन में से 7.36 लाख टन और छत्तीसगढ़ में 6.54 लाख टन में से 0.52 लाख टन कचरे का निस्तारण अभी बाकी है। आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय के अनुसार 1,250 डंप साइटों में कूड़ा निस्तारण का काम पिछले दिनों शुरू कर दिया गया है।

राजधानी दिल्ली में लाख कोशिशों के बावजूद कूड़े के पहाड़ खत्म होने का नाम नहीं ले रहे हैं। यहां चार बार तो समय सीमा भी बदली जा चुकी है। सरकार, नगर निगम के बीच दावपेच के चलते अभी तय की गयी दिसम्बर, 2028 की समय सीमा में फिर बदलाव हो सकता है। दिल्ली में गाजीपुर, ओखला और भलस्वा ये तीन मुख्य लैंडफिल साइट हैं। यहां ओखला और भलस्वा में कचरा निस्तारण का काम बंद पड़ा है। गाजीपुर लैंडफिल साइट पर निस्तारण प्रक्रिया की धीमी गति के कारण, वहां 30 लाख मीट्रिक टन कूड़े का निस्तारण होना चाहिए था, लेकिन अब तक केवल 12 लाख मीट्रिक टन कचरे का ही निस्तारण हो सका है। वहीं, नगर निगम की स्थायी समिति के गठन में विलंब के कारण नरेला-बवाना में 3000 टन प्रतिदिन और गाजीपुर में 2000 टन प्रतिदिन कचरे से बिजली बनाने वाले नए प्लांट की योजना स्वीकृति न मिलने के चलते अधर में लटकी हुई है। तेहरांड लैंडफिल पर भी लगे कूड़े से बिजली बनाने के प्लांट की कूड़ा निस्तारण क्षमता में 1000 टन रोजाना बढ़ोतरी की योजना भी अधर में लटक गयी है।

मौजूदा हालात पर नजर डालें, तो गाजीपुर, ओखला और भलस्वा लैंडफिल साइटों में कुल 159.87 लाख टन कचरा मौजूद है। यदि निस्तारण की गति इसी रफ्तार से बनी रही, तो उम्मीद है कि 2028 तक इन कूड़े के पहाड़ों को खत्म किया जा सकेगा। यह बात दींगर है कि कूड़े के पहाड़ पहले से कुछ कम जरूर हुई है। लेकिन इनके आसपास रहने-बसने वाले लोग, प्रदूषित व जहरील पानी पीने से संक्रामक रोग, बुखार, किडनी में पथरी सहित पेट के रोगों और जहरीली बदबूदार हवा में सांस लेने के चलते फेफड़े, आंत्रशोथ, हृदय रोग के शिकार होकर मौत के मुंह में जाने को विवश होंगे।

वास्तव में जानलेवा बीमारियों की चपेट में आकर अनचाहे मौत के मुंह में चले जाना इन लोगों की नियति बन गयी है। जब तक इन कूड़े के पहाड़ों की समस्या हल नहीं हो जाती तब तक आसपास बसी बस्तियों के लोगों को इन जानलेवा बीमारियों से निजात मिलना मुश्किल है।

— ज्ञानेन्द्र रावत

शेष पृष्ठ 2 की

शरबती किस्म है। इसके दाने सुडौल, चमकदार, शरबती एवं रोटी के लिए उत्तम है, जिसे सुजाता किस्म के विकल्प के रूप में उगाया जा सकता है। फसल अवधि 115 दिन है तथा 1-2 सिंचाई में 40 क्विंटल प्रति हैक्टेयर से अधिक उपज देती है।

5. मालव शक्ति (एच.आई.-8498) : यह कम ऊंचाई वाली (85 सैटीमीटर) बौनी कठिया (झूरम) किस्म है। यह नवम्बर-दिसम्बर तक बोने हेतु उपयुक्त किस्म है। इसका दाना अत्यन्त आकर्षक, बड़ा, चमकदार, प्रोटीन व विटामिन ए की मात्रा अधिक, अत्यन्त स्वादिष्ट होता है। बेकरी पदार्थ, नूडल्स, सिवैयां आदि बनाने के लिए उपयुक्त है। बाज़ार भाव अधिक मिलता है तथा गेहूं निर्यात के लिए उत्तम किस्म है। इसकी बौनी नवम्बर से लेकर दिसम्बर के द्वितीय सप्ताह तक की जा सकती है। इसकी फसल लोक-1 से पहले तैयार हो जाती है। इससे अच्छी उपज लेने के लिए 4-5 पानी आवश्यक हैं।

6. मालवश्री (एच.आई.-8381) : यह कठिया गेहूं की श्रेणी में श्रेष्ठ किस्म है। इसके पौधे बौने (85-90 सैटीमीटर ऊंचाई), बालियों के बालों का रंग काला होता है। यह किस्म 4-5 सिंचाई में बेहतर उत्पादन देती है। इसके 1000 दानों का वज़न 50-55 ग्राम एवं उपज क्षमता 50-60 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

7. राज-3077 : गेहूं की एसी नई किस्म है, जिसमें अन्य प्रजातियों की अपेक्षा 12 प्रतिशत अधिक प्रोटीन पाया जाता है। इसे अम्लीय एवं क्षारीय दानों प्रकार की मिट्टियों में बोया जा सकता है।

बीजोपचार : बुवाई के लिए बीज इस्तेमाल किया जाता है, जो बीज दर एवं भूमि में नमी की मात्रा, बोने की विधि तथा किस्म पर निर्भर करती है। बोने गेहूं की खेती के लिए बीज की मात्रा देशी गेहूं से अधिक होती है। बोने गेहूं के लिए 100-120 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर तथा देशी गेहूं के लिए 70-90 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर की दर से बोते हैं। असिंचित गेहूं के लिए बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर व कतारों के बीच की दूरी 22-23 सैटीमीटर होनी चाहिए। समय पर बोये जाने वाले सिंचित गेहूं में बीज दर 100-125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर व कतारों की दूरी 20-22.5 सैटीमीटर रखनी चाहिए। दर वाली सिंचित गेहूं की बुवाई के लिए बीज दर 125-150 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर तथा पंक्तियों के मध्य 15-18 सैटीमीटर का अंतरण रखना उचित रहता है। बीजोपचार के लिए बीज की मात्रा 100 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर व कतारों के बीच की दूरी 22-23 सैटीमीटर होनी चाहिए। समय पर बोये जाने वाले सिंचित गेहूं में बीज दर 100-125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर व कतारों की दूरी 20-22.5 सैटीमीटर रखनी चाहिए। दर वाली सिंचित गेहूं की बुवाई के लिए बीज दर 125-150 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर तथा पंक्तियों के मध्य 15-18 सैटीमीटर का अंतरण रखना उचित रहता है। बीज को रात भर पानी में भिगो कर बोना लाभप्रद है। भारी चिकनी मिट्टी में नमी की मात्रा आवश्यकता से कम या अधिक रहने तथा बुवाई में बहुत देर हो जाने पर अधिक बीज बोना चाहिए। मिट्टी के कम उपजाऊ होने या फसल पर रोग या कीटों से आक्रमण की संभावना होने पर भी बीज अधिक मात्रा में डाले जाते हैं।

बुवाई का समय : गेहूं बीज की फसल है जिसे शीतकालीन मौसम में उगाया जाता है। भारत के विभिन्न भागों में गेहूं का जीवन काल भिन्न-भिन्न रहता है। सामान्य तौर पर गेहूं की बुवाई अक्टूबर से दिसम्बर तक की जाती है। इसके अलावा रोगों की रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा की 4 ग्राम मात्रा 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम के साथ प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज शोधन किया जा सकता है।

बीज बोने की गहराई : बौने गेहूं की बुवाई में गहराई का विशेष लगभग 15 नवम्बर के आसपास संश्लेषण में कर लेते हैं, जिससे उपज अधिक मिलती है। गेहूं में प्रति कार्मीटर 400-500 बाली युक्त पौधे होने से अच्छी उपज प्राप्त होती है। प्रयोगों में यह देखा गया है कि पूर्व-पश्चिम व उत्तर-दक्षिण क्रास बुवाई करने पर गेहूं की अधिक उपज प्राप्त होती है। इस विधि में कुल बीज व खाद की मात्रा, आधा-आधा करके उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में बुवाई की जाती है। इस प्रकार पौधे सूर्य की रोशनी का उचित उपयोग प्रकाश संश्लेषण में कर लेते हैं, जिससे उपज अधिक मिलती है। गेहूं में प्रति कार्मीटर 400-500 बाली युक्त पौधे होने से अच्छी उपज प्राप्त होती है।

गेहूं की उन्नत खेती

का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है। बोनी में 30 नवम

गतांक से आगे

कीट नियंत्रण :- फूलगोभी को हानि पहुंचाने वाले निम्न कीड़े-मकोड़े हैं -

तम्बाकू की सुंडी :- वयस्क मादा कीट पत्तियों की निचली सतह पर झुंड में अंडे देती है। 4-5 दिनों के बाद अंडों सुंडी निकलती है और पत्तियों को खाती है। सितम्बर से नवम्बर तक इसका प्रकोप अधिक होता है।

रोकथाम :- पत्तियों के निचले हिस्से पर गुच्छों में दिए गए। अंडों को पत्तियों से तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। फेरोमोन ट्रैप लगाकर वयस्क नर को पकड़कर खत्म कर देना चाहिए। एच एन पी वी 250 से 300 एल ई, एक किलो गुड़ व

अधिक उत्पादन के लिये अपनायें फूलगोभी की उन्नत खेती

जे.पी. सिंह, प्राध्यापक; अलका वर्मा, जे.आर.ओ.; इप्सीता पानीग्रही,

सब्जी विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, गो.ब. पंत कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखण्ड)

के किनारों को खाती है। ये दोनों पत्तियों को खाते हैं। इस कीट के सुंडी पत्तियों की निचली सतह पर खाते हैं और छोटे-छोटे छिद्र बना देते हैं, जिसके कारण पत्तियों की आकृति बिगड़ जाती है। जब इनका

थीरम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोएं।

पत्ती का आल्टरनेरिया धब्बा

रोग :- फूलगोभी में बढ़वार की प्रारंभिक अवस्था में निचली पत्तियों में ही आता है। इस रोग में पत्तियों पर गोल भूरे धब्बे बनते हैं। धब्बों में गोल छल्ले स्पष्ट दिखते हैं। बीज की फसल में पुष्पक्रम तथा कल्लियां भारी मात्रा में प्रभावित होती हैं और पैदावार कम हो जाती है।

रोकथाम :- शाम के समय क्लोरोथेलोनिल कवकनाशी के 0.2 प्रतिशत जलीय घोल को स्टीकर के साथ मिलाकर एक बार छिड़काव करना चाहिए। स्वस्थ पौधों से ही बीज का चुनाव करें तथा फली बनने के समय एक बार उपरोक्त दवा या मैकॉजेब 0.25 प्रतिशत (2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी) का प्रयोग करें।

काला गलन :- यह रोग जैनथोमोनाम कैपेस्ट्रिस द्वारा होता है। रोगी पौधों की पत्तियों पर अंगेजी के 'वी' के आकार के भूरे या पीले रंग के धब्बे स्पष्ट दिखाई देंगे, इसके कारण जड़ या डंठल के भीतरी भाग पतले पड़ जाते हैं और पते धीरे-धीरे पीले पड़कर सूख जाते हैं।

रोकथाम :- इसकी रोकथाम के लिए बीज को बोने से पूर्व 100 पी.पी.एम. स्ट्रैप्टोमार्झिसिन या एग्रिमार्झिसिन से बीज को उपचारित करके बोएं। फसल के रोग लगने पर कॉपर ऑक्सिस्क्लोराइड का 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 10 दिन के अंतराल पर प्रयोग करें।

क्लब रॉट और सॉफ्ट रॉट :- इस रोग में पौधा कोमल, पतला तथा दुर्गंधित होता है, यह रोग स्नोबॉल प्रभेद में अधिक लगता है।

रोकथाम :- इसकी रोकथाम के लिए हमेशा स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीज ही प्रयुक्त करें। बीज को बोने से पूर्व 2.5 ग्राम कैप्टान या

और फूल पीले पड़ जाते हैं, पुरानी पत्तियां नीचे की ओर मुड़ जाती हैं और तना खोखला हो जाता है। यह रोग बोरेन की कमी से होता है। इसकी रोकथाम के लिए जुताई के समय 10-15 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर बोरेन का उपयोग करें।

बटनिंग :- फूलों के पकने से पूर्व फूल छोटे रह कर फटने लगते हैं और पौधे का विकास भी सामान्य नहीं होता है। इसका मुख्य कारण नाईट्रोजन का अभाव है। अगती जातियों को देर से बोने पर यह भी कमी उत्पन्न हो जाती है। इसकी रोकथाम के लिए नत्रजन खाद का प्रयोग अचित मात्रा में खेत तैयारकरने के समय करें।

व्हिप टेल :- अम्लीय भूमि में पौधों को मोलिब्डनम पर्याप्त न मिलने के कारण पत्तियों का उचित विकास न होकर केवल मध्य शिरा का ही विकास होता है। इसकी रोकथाम के लिए 0.5-1.0 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर सोडियम या अमोनियम मोलिवडेट खेत में तैयार करने के



0.02 प्रतिशत टीपोल को 800 लीटर पानी में घोलकर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें अथवा साईपरमिथीन का 5.0 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव इस कीट के नियंत्रण में लाभकारी है।

एफिड या माहूं :- यह कीट के अधक व वयस्क दोनों ही पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। यह पत्तियों और पौधों के अन्य कोमल भागों का रस चूसता है, जिसके कारण पत्तियां मुड़ जाती हैं और बाद में पीली होकर मर जाती है।

रोकथाम :- इसकी रोकथाम के लिए रोगोर 5 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में या मिथाईल डेमिटॉन का 10 मि.ली. प्रति 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

हीरक पृष्ठ कीट, कैबेज लूपर :- यह मौथ भूरे या कर्त्तव्य रंग के होते हैं, जो 1 सै.मी. लंबे होते हैं। इसके अंडे 0.5-0.8 मि.मी. व्यास के होते हैं। इनकी सुंडी 1 सै.मी. लंबी होती है, जो पौधों की पत्तियों

प्रकोप अधिक मात्रा में होता है तो छोटे पौधों की पत्तियों बिलकुल समाप्त हो जाती है, जिससे पौधे मर जाते हैं।

रोकथाम :- 0.25 वर्गमीटर गोभी की क्यारी के चारों तरफ में पौधों के अंगों पर चीनी पत्तोगोभी को फंसाने वाले फसल के रूप में गोभी के साथ-साथ रोपाई करना चाहिए। 0.4 प्रतिशत नीम की गिरी का निचोड़ फसल पर छिड़कने से इस कीट का प्रकोप कम हो जाता है। अगर इस कीट की प्रकोप बहुत ज्यादा हो तो मिथाईल डेमिटॉन या रोगोर का 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से 1 बार छिड़काव करना चाहिए।

आर्ड विगलन :- यह रोग पीथियम डिवारियम नामक फफूंदी के कारण होता है, जिसके कारण पौध मर जाती है।

रोकथाम :- इसकी रोकथाम के लिए हमेशा स्वस्थ एवं रोगमुक्त बीज ही प्रयुक्त करें। बीज को बोने से पूर्व 2.5 ग्राम कैप्टान या

दवा लेने के अवसर बहुत ही कम आते हैं। कभी तुमने बिल्ली या कुत्तों को घास खाते देखा है? यदि नहीं तो जरूर देखना। उन्हें जब कभी अपचन या कब्ज़ की शिकायत होती है, तो वे घास खाकर अपने पेट का पाचन सुधारते हैं।

मांसाहारी व शाकाहारी सभी जानवरों को घास खाने पर चाट कर ठीक

उन्हें इतना ज्ञान होता है कि कौन-सी

तकलीफ या बीमारी पर क्या दवा

ली जाए। मांसाहारी जानवरों को तो

कर लेते हैं, परन्तु जहां वे चाट नहीं

सकते, वहां या तो अपने साथियों

की सहायता लेते हैं, या फिर नमकीन

पौधों में मौजूद नमक पर निर्भर होते हैं।

ये जानवर जंगल में नमकीन

मिट्टी के स्थान भी ढूँढ़ लेते हैं तथा

प्रति दिन उस स्थान पर जाकर नमक

प्रति चाट कर रोग से लड़ने की शक्ति बढ़ाते हैं। नमक का गुण तुम्हें मालूम है न। नमक रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाता है तथा इससे चोटें व घाव शीघ्र भर जाते हैं, पर इसका मतलब यह नहीं है कि तुम भी नमक ज्यादा खाने लगो।

अक्सर जंगली जानवरों को अपने खून के लिए नमक की जरूरत होती है। नमक का अभाव होने पर वे कमज़ोर हो जाते हैं और उनकी भूख खत्म हो जाती है।

मांस खाने वाले पशुओं को जितने नमक की जरूरत होती है, वह उन्हें घास खाने वाले पशुओं के मांस, हड्डियों और खून से मिल जाता है, जबकि घास-पत्ती खाने वाले पशु अपने द्वारा खाए जाने वाले पौधों में मौजूद नमक पर निर्भर होते हैं।

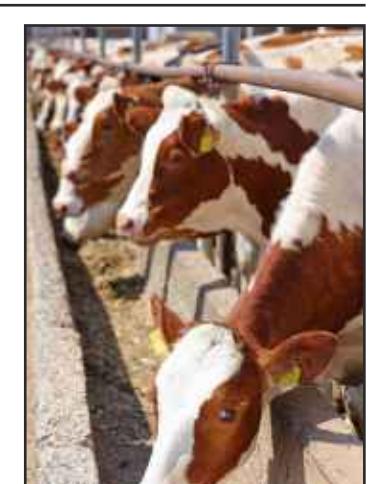
ये जानवर जंगल में नमकीन मिट्टी के स्थान भी ढूँढ़ लेते हैं तथा प्रति दिन उस स्थान पर जाकर नमक

चाटते हैं।

रेगिस्तान में रहने वाले कई पशु वहां पाए जाने वाले पौधों की पत्तियों से नमकीन ओस चाटते हैं। गायों, भेड़ों, बकरियों और घोड़ों को जब भी मौका मिलता है, वे भूखों की तरह नमक खा जाते हैं। तुमने देखा होगा कि जब गाय, बैल या भैंस को खली, बिनौला खिलाया जाता है, तो उसमें नमक मिलता है।

एल्क और रेंडियर जैसे जानवर कभी-कभी लंबी-लंबी दूरियां तय करके समुद्र तट पर जाते हैं और वहां पशुओं के काटे हैं। असम के वनों में वहां के शेर नमक की पूर्ति बड़े मनोरंजक ढंग से करते हैं। वहां के वनों में पानी में बहुत नमक रहता है।

इस कारण पानी में रहने वाले जानवर केकड़े, कछुए, मछली आदि काफी नमकीन स्वाद के होते हैं। शेर अपना पंजा पानी के अंदर डाल कर बैठ जाता है। जब काफी समय



हो जाता है, तो कौतूहल वश केकड़े उसके पंजे को पकड़ लेते हैं। ज्यों ही केकड़े की जकड़ पंजे पर पहुंचती है, शेर जल्दी से पंजा निकाल कर केकड़ा खा लेता है और पेट भरने के साथ-साथ शेरीर में नमक की पूर्ति भी कर लेता है।

तो कहो भई, अब पता चला न, जानवरों का, डॉक्टर कौन है और नमक है उनके रोगों की एक दवा।



धरती को मुहिम की एक अनोखी मुहिम

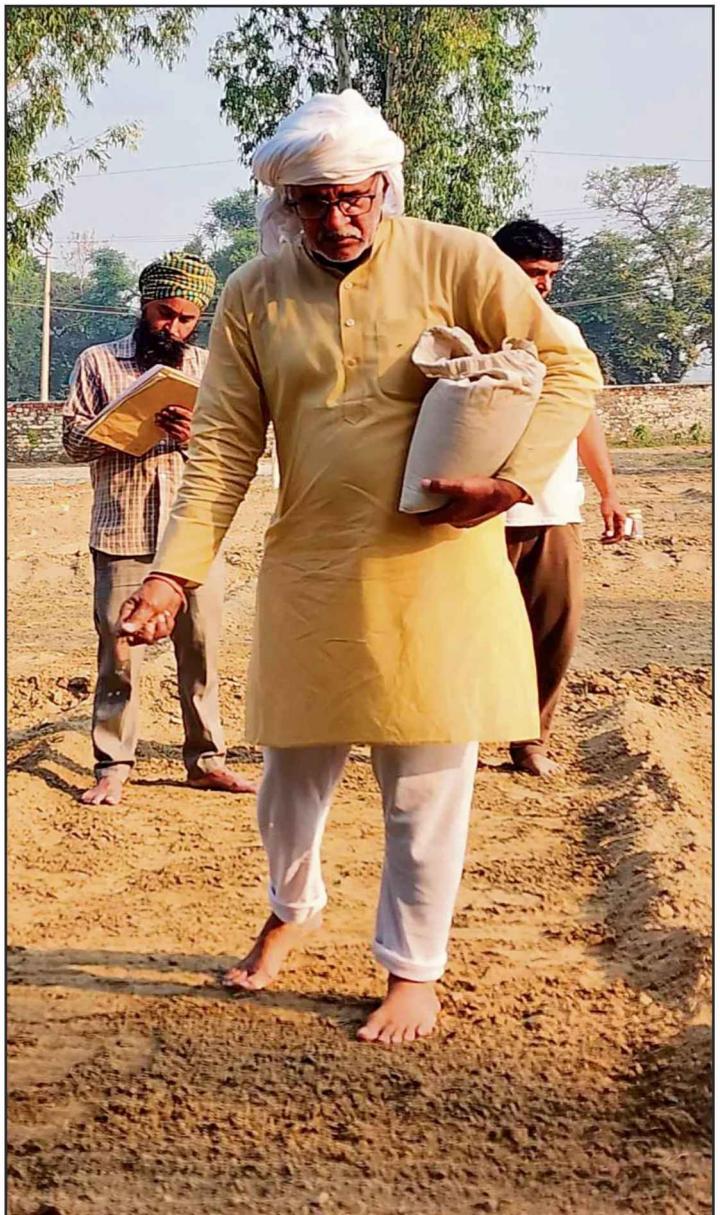
* पलॉवरमैन डॉ. रामजी जयमल अपनी मेहनत से सपना कर रहे साकार
* विविध रंग और खुशबू के फूल खिलाएं, पर्यावरण मुहिम

देश व प्रदेश को विविध प्रकार के फूलों, रंगों और खुशबू से सजाने में जुटे हैं। रामजी जयमल उपमंडल के गांव रायतखाना व इस्लामनगर के सरकारी स्कूलों में पहुंचे। स्कूल

यहां क्यारियां तैयार कर लें ताकि कोई भी पौधा खराब न हो और सभी पौधों में फूल खिल कर हमारे वातावरण को सुंदर बनाएं। जम्मू कश्मीर के उथमपुर व पंजाब के

बंटी ने उनका स्वागत किया। रात करीब 12 बजे तक यहां पर फूलों की 75 से अधिक किस्मों की बिजाई की गई। रात्रि विश्राम के बाद डॉ. रामजी जयमल गांव इस्लामनगर के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पहुंचे और धर्मवीर लठवाल व अजैब सिंह आदि अध्यापकों द्वारा तैयार की गई क्यारियों में 90 के करीब फूलों की बिजाई की। बिजाई के कार्य में विवेक सिंह सहित अनेक अध्यापकों का सहयोग रहा। यहां पर वन खंड अधिकारी राम कुमार लठवाल ने मौके पर पहुंच कर अभियान की सराहना की।

यहां पर विशेष बातचीत करते हुए आपसी संस्था से जुड़े पलॉवरमैन डॉ. रामजी जयमल ने कहा कि फूलों की मुहिम गत करीब 15 वर्ष से निरंतर चल रही है। अब यह मुहिम हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, आसाम, मेघालय सहित अनेक प्रदेशों में पहुंच चुकी है। किसान की खेती की तरह ही मुहिम में मिट्टी को तैयार करके बिजाई की जाती है। पौध उगाने पर पौध को उखाड़ कर



डॉ. रामजी के काम पर फिल्म भी हो चुकी तैयार

सिरसा जिला के गांव दड़बी से फूलों की मुहिम की शुरुआत करने वाले पलॉवरमैन डॉ. रामजी जयमल के काम पर फिल्मकार व निर्देशक नकुल देव ने उनके साथ दिन रात बिताते हुए डोक्यूमेंट्री फिल्म – बिफोर आई डाई बनाई है। इस फिल्म को दुनिया के विभिन्न देशों में आयोजित फिल्म फेस्टिवलों में अवार्ड मिले हैं और डॉ. रामजी के काम को देखने के लिए दुनिया के विभिन्न देशों के प्रतिनिधि पहुंच चुके हैं।

के मैदान में अध्यापकों द्वारा तैयार की गई क्यारियों में उन्होंने 100 के करीब किस्मों की बिजाई की है। जल्द ही उनके द्वारा की गई बिजाई पौध में तबदील हो जाएगी। इस पौध को इन्द्री क्षेत्र व करनाल जिला ही नहीं आस-पास के जिलों में फूलों के चाहवान लोग अपने संस्थानों या परिसरों में क्यारियां बनाकर मुफ्त प्राप्त कर सकते हैं। डॉ. रामजी ने अपील की है कि पौध प्राप्त करने से पूर्व सभी नागरिक अपने

विभिन्न स्थानों पर फूलों की बिजाई करते हुए पलॉवरमैन के नाम से विख्यात डॉ. रामजी जयमल रात को इन्द्री के गांव रायतखाना स्थित राजकीय मॉडल संसेत प्राथमिक पाठशाला में पहुंचे तो यहां पर स्कूल प्रभारी देवेन्द्र सिंह देवा की अगुवाई में क्यारियां तैयार थीं। फूलों की मुहिम से जुड़े अध्यापक देवेन्द्र देवा, महिन्द्र कुमार, अरुण कुमार, जगदीश चंद, जसवंत बांकुरा, मान सिंह, धर्मवीर लठवाल, नरन्द्र

वितरित किया जाता है। पौध लगाने के लिए सहेजा जाता है। इस पूरे और उसकी समुचित सिंचाई व देखरेख करने से फूल खिलते हैं और पूरा वर्षभर मुहिम से जुड़े देशभर के विशेषज्ञता के कार्य हैं। वे वातावरण महक उठता है। फूलों के बाद बीज तैयार होते हैं। उन्हें एकत्रित किया जाता है। अगले वर्ष करते हैं।



किसान खुशहाल तो देश खुशहाल



KS 9300
SELF COMBINE HARVESTER



GREENGOLD
TRACTOR DRIVEN
COMBINE HARVESTER



KS GROUP

MALERKOTLA, PUNJAB

के.एस. ग्रुप की ओर से
दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं



KSA 756 XH
STRAW REAPER



GREENGOLD 220T
TRACK COMBINER HARVESTER



BEW SUPER SEEDER



BEW ROTAVATOR



BEW SEED DRILL



KSP LASER LEVELER



KS PADDY CHOPPER

के.एस. एग्रोटैक प्राईवेट लिम.
राएकोट रोड मलेरकोटला, ज़िला संग्रुर, पंजाब (भारत)

Mob. : 92170 71755, 92170 70755
www.ksagrotech.org | info@ksagrotech.org